

कपड़े की बुनाई में बाना 8. 'भरणी' नक्षत्र 9. मयूरी, मोरनी 10. गारुडी मंत्र।

भरपाई स्त्री. (देश.) पूर्ण रूप से, भली-भाँति, चुक जाने का भाव, जो कुछ बाकी हो वह पूरा-पूरा पा जाना, बेबाकी, पूरा-पूरा पावना या पा जाना, पूरी प्राप्ति पर दी जाने वाली प्राप्ति रसीद।

भरपूर वि. (देश.) पूरी तरह से भरा हुआ, पूरा पूरा, जिसमें कोई कमी न हो, परिपूर्ण, बहुत अधिक, आवश्यकता से अधिक क्रि.वि. पूर्ण रूप से, अच्छी तरह।

भरभराना अ.क्रि. (अनु.) 1. (रोआँ) खड़ा होना 2. किसी भवन आदि का अचानक नीचे गिर जाना।

भरम पुं. (तद्.) 1. भ्रम, संशय, संदेह, भेद, भ्रांति, गलती, भूल, धोखा, रहस्य, प्रतिष्ठा, साख, सम्मान, गौरव 2. आतंक, धाक।

भरमना अ.क्रि. (तद्.) भ्रमण, घूमना, चलना, फिरना; मारा मारा फिरना, भटकना, बहकना।

भरमार स्त्री. (देश.) बहुत ज्यादा होने का भाव, अधिकता, बाहुल्य, प्रचुरता, बहुतायत, आधिक्य।

भरवाना स.क्रि. (देश.) भरने का काम दूसरे से कराना, कुछ भरने को प्रवृत्त करना।

भरसक क्रि.वि. (देश.) यथाशक्ति, जहाँ तक संभव हो, शक्ति भर।

भराई स्त्री. (देश.) 1. भरने या भराने की क्रिया भाव 2. मजदूरी 3. खेती की फसल में पानी लगाने की क्रिया।

भराव पुं. (देश.) 1. भरने की क्रिया/भाव, भरती, खाली जगह को पूर्ण करने की क्रिया, वह वस्तु/रचना जिससे कोई खाली स्थान भरा गया हो, भरत 2. कशीदाकारी में फूल-पत्तियों का काम।

भरी वि. (देश.) 1. जिसमें कुछ भरा गया हो या कुछ डाला गया हो उदा. भरी सुराही, जो खाली न हो, जिसमें उपयुक्त वस्तु काफी मात्रा या परिमाण में हों 2. किसी वस्तु से ओत-प्रोत जो

पूर्णता को प्राप्त हो चुकी हो, समृद्ध 3. एक रुपए या दस माशेभर की एक तौला।

भरूही स्त्री. (देश.) भरई, भरत नामक पक्षी, बगेरी, भरल।

भरोसा पुं. (देश.) 1. अवलंब, आश्रय, उम्मीद, आसरा, सहारा 2. आशापूर्ति का विश्वास 3. आश्वासन।

भर्ग पुं. (तत्.) 1. शिव, महादेव, ब्रह्मा, सूर्य की तेजस्विता, तेज, दीप्ति, कांति या चमक 2. भूना, भर्जन 3. एक प्राचीन देश।

भर्जक वि. (तत्.) 1. भूने वाला 2. अकोरने वाला 3. वध करने वाला।

भर्जित्र पुं. (तत्.) भूने की मशीन, ऐसा उपकरण जिससे कोई पदार्थ भूना जा सके।

भर्ता पुं. (तद्.) 1. भर्तृ, भरण-पोषण करने वाला 2. अधिपति, पालक 3. स्वामी, खाविंद, कांत, पति 4. नायक 5. विष्णु।

भर्तार पुं. (तद्.) दे. भर्ता।

भर्तृहरि पुं. (तत्.) प्राचीन भारत के एक महात्मा, कवि और संस्कृत वैयाकरण जो कि शृंगार-शतक, नीति-शतक एवं वैराग्य-शतक के रचयिता हैं।

भर्त्सना स्त्री. (तत्.) 1. किसी के अनुचित काम अथवा आचरण से क्रुद्ध या खिन्न होकर उसे लज्जित करना या कठोर शब्द कहना, प्रताड़ना, डाँट-डपट, फटकार 2. निंदा 3. शिकायत।

भर्ता वि. (देश.) मटमैला सफेद पुं. 1. झाँसा 2. केवल फुसलाने या शांत रखने के लिए कही जाने वाली झूठी बात 3. चकमा 4. पक्षियों की उड़ान 5. एक प्रकार का पक्षी।

भलका पुं. (तद्.) 1. भल्ल, भाले का फलक, बाण का फलक, गाँसी, भलाका 2. नथ में जड़ा गया सोने या चाँदी का टुकड़ा।

भलमनसी स्त्री. (देश.) भलमन सहित, भलमन-साहत, भला मनुष्य होने की अवस्था या भाव,